जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक

जैन जागृति

(Since 1969) www.jainjagruti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड,
सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.
ऑफिस मो. : ८२६२०५६४८०
मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१

❖ संस्थापक ❖
स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया
सहसंपादक : सौ. सुनंदा एस. चोरडिया

❖ वर्ष ५७ वे ❖ अंक ५ वा ❖ जानेवारी २०२६ ❖ वीर संवत २५५२ ❖ विक्रम संवत २०८२

या अंकात	पान नं.		पान नं.
● ।। जिनेश्वरी ।।		● गुणस्थान	६७
अध्याय २ : परिषह प्रविभक्ती	१५	● बिने जाने कित जाऊँ – प्रश्नोत्तरी प्रवचन	७७
● कव्हर तपशील	२६	● सुविचार	८०
● आओ ! दुर्ध्यान छोडे		● जिन शासन के चमकते हिरे : मरीचिकुमार	८१
१८. तृषा ध्यान	३१	● मन : स्वास्थ्य – मन शांति आणि मी	८७
१९. क्षुधा ध्यान	३२	● जिन खोजा तिन पाइया	८९
२०. पथ ध्यान्य	३३	● यदि आप अन्य को उठाओगे,	
● श्री कापरड़ा तीर्थ, राजस्थान	३७	तो भी उठोगे	९०
● मोह व्याधि मिटाती है वीतराग वाणी	४३	● युवा पिढी	९१
● परिज्ञाता कर्मा – गहरी जिज्ञासा	४५	● बैंक बेलेन्स – Installment	९३
● कलिकाल सर्वज्ञ आचार्य हेमचन्द्र	४७	● छोटी सी बातें	९३
● रत्न संदेश	५०	● हास्य जागृती	९४
● हमारी आठ भूलें	५१	● आनंदऋषिजी हॉस्पिटल – पुरस्कार	९९
● आत्म बोध	५४	● सूर्यदत्त एज्युकेशन फाऊंडेशन, पुणे	१००
● पासवर्ड – Passward	५५	● श्री. तरुणभाई खाटडिया –	
● ऐसी हुई जब गुरुकृपा : चैन सूं रहणों	५७	५००० एकासणा तप	१०३

- श्री शांतीनाथ सेवा संस्थान, संगमनेर १०३
- महाराष्ट्र राज्य व्यापार कृती समिती १०४
- डॉ. दिलीप धींग, चेन्नई – सन्मान १०५
- मैत्रीचा गणपती, पुणे १०७
- दोन हजार विद्यार्थ्यांना उबदार कपड्याची भेट, पुणे १०७
- जागृत विचार १०८
- कडवे प्रवचन १०८
- महाराष्ट्र राज्य नगर परिषद/नगर पंचायत विजयी जैन समाजाचे उमेदवार १११
- श्री. शशिकांतजी पारख, नाशिक – 'समाज भूषण' पुरस्कार ११३
- संचेती हॉस्पिटल, पुणे – ६० वर्षे पूर्ण ११४
- विविध धार्मिक, सामाजिक बातम्या

जैन जागृति – ''मॅगझिन पोस्ट'' सुविधेसह वर्गणीचे दर (महाराष्ट्र साठी)

*** वार्षिक वर्गणी – रु. ८०० * त्रिवार्षिक वर्गणी – रु. २३००**

जैन जागृति – ''मॅगझिन पोस्ट'' सुविधेसह वर्गणीचे दर (महाराष्ट्र बाहेर)

*** वार्षिक वर्गणी – रु. ९०० * त्रिवार्षिक वर्गणी – रु. २६००**

मॅगझिन पोस्ट या सुविधेमुळे प्रत्येक ग्राहकांना १००% अंक ३ ते ४ दिवसात मिळणार.

या अंकाची किंमत ५० रु. • **Google Pay - M. 9822086997**

सुसंस्कार व सदाचाराचा पुरस्कार करणाऱ्या 'जैन जागृति' मासिकाचे वर्गणीदार व्हा !

- आपण स्वत: जैन जागृतिचे ग्राहक बना व आपले नातेवाईक, मित्र, व्यापारी बंधू इत्यादींना वर्गणीदार नसतील तर त्यांना वर्गणीदार होण्यास सांगा.
- 'जैन जागृति' मासिकाची वर्गणी भरून इतरांना भेट पाठवा.

जैन जागृति वर्गणी व जाहिरात – रोख/Google Pay - M. 9822086997/ AT PAR चेक/पुणे चेकने/RTGS इत्यादी द्वारा पाठवावी

BANK ACCOUNT DETAILS - A/C Name : JAIN JAGRUTI
Bank : STATE BANK OF INDIA • Branch : Market Yard, Pune 37.
Current A/c No. : 10521020146 • IFS Code : SBIN0006117

'जैन जागृति' हे मासिक मालक, मुद्रक व प्रकाशक एस. के. चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, शॉप नं. १२-१३, पर्वती टॉवर्स, पुणे - ४११००९ येथे छापून ६२ बी, ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, पुणे – ४११ ०३७ येथे प्रसिध्द केले. संपादक – एस. के. चोरडिया

"Jain Jagruti" monthly magazine is owned, printed & published by S. K. Chordia, Printed at Prakash Offset, Shop No. 12-13, Parvati Towers, Pune 411009. Published at 62-B, Ruturaj Society, Pune - Satara Road, Pune - 411 037. Editor - S. K. Chordia

टिप : या अंकात प्रसिध्द झालेल्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवाईसाठी पुणे न्यायलय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

कव्हर तपशील - जानेवारी २०२६

❖ **श्री कापरड़ा तीर्थ – राजस्थान**

श्री कापरड़ा तीर्थ, श्री स्वयंभू पार्श्वनाथ मंदिर कापरड़ा, जि. जोधपुर, राजस्थान. या तीर्थ स्थानाची माहितीचा लेख पान नं. ३७

❖ **संचेती हॉस्पिटल, पुणे**

पुणे येथील भारतात आर्थोपेडिक केअर मध्ये सर्वात विश्वसनीय संस्थांपैकी एक असलेल्या संचेती हॉस्पिटलची ६० वर्षे पूर्ण झाली. (बातमी पान नं. ११४)

❖ **श्री. शशिकांतजी पारख, नाशिक**

नाशिक येथील नामको हॉस्पिटलचे सचिव व धार्मिक, सामाजिक कार्यकर्ते श्री. शशिकांतजी पारख यांना गुरु श्री सौभाग्य गौरव समिती तर्फे समाजभूषण पुरस्कार देण्यात आले. (बातमी पान नं. ११३)

❖ **आनंदऋषिजी हॉस्पिटल – पुरस्कार**

गुरु श्री सौभाग्य गौरव समिती तर्फे आहिल्यानगर येथील आनंदऋषिजी हॉस्पिटल ॲण्ड मेडिकल रिसर्च सेंटरला सौभाग्य विभूषण पुरस्कार देण्यात आले. (बातमी पान नं. ९९)

❖ **महाराष्ट्र राज्य व्यापार कृती समिती**

महाराष्ट्र राज्य व्यापार कृती समिती तर्फे मांडण्यात आलेल्या महाराष्ट्रातील सर्व व्यापारी संघटनेच्या मागण्या बाबत चर्चा करण्यासाठी पणन मंत्री श्री. जयकुमारजी रावल यांच्या अध्यक्षतेखाली नागपूर येथे बैठक संपन्न झाली. (बातमी पान नं. १०४)

❖ **डॉ. दिलीप धींग, चेन्नई**

भोगीलाल लहेरचंद प्राच्य संस्था दिल्ली द्वारा साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग यांचे सन्मान करण्यात आले. (बातमी पान नं. १०५)

❖ **प्रा. डॉ. संजयजी बी. चोरडिया, सूर्यदत्त ग्रुप**

पुणे टाईम्स मिरर आणि सिव्हिका मिरर यांच्या संयुक्त विद्यमानाने सूर्यदत्त एज्युकेशन फाउंडेशनचे संस्थापक व अध्यक्ष प्रा. डॉ. संजयजी बी. चोरडिया यांना 'पुणे टाइम्स मिरर आयकॉनिक पुणेकर पुरस्कार २०२५' प्रदान करुन गौरविण्यात आले. (बातमी पान नं. १००)

❖ **मैत्रीचा गणपती – श्री. मनोजजी छाजेड, पुणे**

मैत्रीचा गणपतीचे प्रमुख उद्योगपती, सिद्धी फाऊंडेशनचे संचालक श्री. मनोजजी छाजेड यांच्या वाढदिवसा निमित्त दान पेटीत आलेली सर्व रक्कम गुरुमाँ डॉ. मंजुश्री गोशाळेला दान देण्यात आली. (बातमी पान नं. १०७)

❖ **दोन हजार विद्यार्थ्यांना उबदार कपड्याचे वाटप**

पुणे येथील जैन समाजातील युवकांनी एकत्र येऊन गरजु मुलांना दोन हजार उबदार कपड्यांची भेट दिली. (बातमी पान नं. १०७) •

जास्तीत जास्त जैन समाजापर्यंत पोहचण्याचा सर्वांत खात्रीशीर, सर्वांत सोपा व सर्वांत रिजनेबल मार्ग...

जैन जागृति

मोह – व्याधि मिटाती है वीतराग वाणी

प्रवचनकार : पूज्य विदुषी शारदाबाई महासतीजी

अनन्तकाल से अपना जीवात्मा संसार में परिभ्रमण कर रहा है, उसका मूल कारण भौतिक सुख के प्रति राग और दुःख के प्रति द्वेष है। राग और द्वेष से मोह उत्पन्न होता है। मोह के साथ मित्रता करके जीव कर्म के कर्ज में डूब गया है और परभाव में झूल रहा है। इस मोह का विष-उतारने हेतु वीतराग-प्रभु की वाणी अमूल्य जड़ी-बूटी है। इस वीतरागवाणी पर अगर जीव को श्रद्धा-प्रतीति – रुचि-निष्ठा हो तो उसके जन्म-मरण चक्कर मिट सकते हैं। इन चक्करों को मिटाने के लिए कर्म के साथ संग्राम करना पड़ेगा।

राज्य वैभव के सुख में पले हुए और छत्रपलंग में पोढ़नेवाले अपने जिनशासन-नामक प्रभु ने कर्म की जंजीरें (श्रृंखलाएँ) तोड़ने के लिए कोमलता (सुकुमारता) का त्याग करके अनार्यदेश में विचरण किया । जहाँ अनाड़ी मनुष्य साधु किसे कहा जाए ? उन्हें भिक्षा के रूप में आहार-पानी में किस प्रकार का और कैसे बहराया (दिया) जाय ? इस विषय में कुछ भी समझते नहीं थे । बल्कि वे आहार-पानी लेने (भिक्षा लेने) जाते तो उन्हें मारते एवं उनपर कुत्ते छोड़ देते थे। ऐसे (अनार्य) देश में प्रभु सामने चलकर गए। ऐसे महान पुरुषों का हृदय कर्मों के साथ युद्ध करते समय वज्र जैसा कठोर बन जाता है । इसके विपरीत दूसरों की रक्षा-दया करने में फूल से भी कोमल बन जाता है ।

भगवान महावीर का जीवन पढ़ते तो हैं, तो आँखों में आँसू छलछला उठते हैं कि हे प्रभो ! एक समय था, जब आप कितने सुकुमार राजकुमार थे ? किन्तु कर्मों का क्षय करने के लिए उद्यत हुए, तब आप पर कैसे-कैसे घोर उपसर्ग आए ? कितने-कितने कठोर परिषह आए ? फिर भी आपने समभावपूर्वक उन्हें सहे, उन पर विजय प्राप्त की। अहो ! आपकी कितनी क्षमता और कैसी कठोर साधना ? अहा ! कोमल शरीरवाले भगवान ने कर्म का ऋण चुकाने के लिए उन पर उपसर्गों के पहाड़ टूट पड़े, परिषहों की झड़ी वरसी, तो भी, 'हाय ! कैसा दुःख है ?' ऐसा जरा भी हुंकार नहीं किया, उन्हें समभाव से धैर्यपूर्वक सहन किया । कषायों को जीतकर आत्मा को उज्ज्वल और शीतलीभूत बनाया।

बन्धुओं ! जहाँ कषाय रूप संताप (गर्मी) है, वहाँ कर्मबन्धन है, परन्तु जहाँ क्षमारूपी शीतलता है, वहाँ कर्मबन्धन नहीं है। जैसे लोहे के टुकड़े को आग में तपाया हो और फिर पानी में डाला जाता है, तो वह सम् करता हुआ पानी को चूस लेता है। परन्तु यदि अग्नि में तपाये बिना लोहे को पानी में डाला जाता है तो वह पानी को चूसता नहीं है। वैसे ही जो आत्मा कषायरूपी अग्नि से तपता है, वह कर्म वर्गणा के पुद्गलों को ग्रहण कर लेता है।

'तत्त्वार्थ सूत्र' में कहा है –

'स कषायत्वाज्जीवः कर्मणो योग्यान् पुद्गलानादत्ते, सबन्धः ।' – अ-८, सू.-२/३

'कषाय से युक्त जीव कर्म के योग्य पुद्गलों का ग्रहण कर लेता है, वही बन्ध है।' कर्म की वर्गणा तो इस लोक में ठूँस ठूँसकर भरी हुई है। परन्तु जीव जब कषाय से जुड़ जाता है और उसमें राग-द्वेष की चिकनाई मिल जाती है, तब वह जीव कर्म का बन्ध करता है। इसके विपरीत जो आत्मा कषाय आने के प्रसंग में सुख और दुःख में सहनशीलता रखकर शीतल बन जाता है, उसके कर्म का बन्धन अत्यन्त अल्प

होता है। अतः कर्म का बन्धन तोड़ना हो तो 'सीइभूएण अप्पणा' अर्थात - आत्मा को शीतलीभूत बनाओ।

मोह वैराग्य में रूपान्तरित : धन्नाजी को संसार असार लगा, वैराग्य जगा, तब वह अपनी माताजी के पास दीक्षा ग्रहण की आज्ञा लेने के लिए गए और बोले - ''माताजी ! मुझे यह संसार असार लगा है। ये संसार के कामभोग क्षणिक सुख, किन्तु लम्बे समय तक दुःख देनेवाले हैं। शास्त्र में यही कहा है : 'खणमित्त-सुक्खा, बहुकालदुक्खा।' - ये कामभोग अनर्थों की खान हैं। अतः मुझे अब संसार में रहकर यह घाटे का धंधा नहीं करना है, जहाँ प्रतिक्षण अनन्त कर्मों की निर्जरा होती है, उस संयम (मुनिदीक्षा) को अंगीकार करना है। अतः माताजी ! मुझे दीक्षा की आज्ञा दो।'' पुत्र के ऐसे वैराग्य भरे शब्द सुनकर माता मूच्छित (बेहोश) होकर धरती पर लुढक पड़ीं। एक समय ऐसा था कि माता का जरा-सा मस्तक दुःखता या बुखार आ जाता, तब धन्नाजी रो पड़ते और भगवान से ऐसी प्रार्थना करते थे कि 'हे प्रभो ! मेरी माता शीघ्र ही अच्छी हो जाए।' परन्तु जबसे संसार की असारता का भान हुआ और वह दीक्षा लेने के लिए तैयार हुए और माता से दीक्षा की आज्ञा माँगी, तब माताजी मूर्च्छित होकर धरती पर लुढक पड़ीं, तब धन्नाजी की आँख में आँसू नहीं आए, क्योंकि उनकी समझ में आ गया कि यह मोह-दशा है है। माता की जब मूर्च्छा दूर हुई और वह होश में आई, तब धन्नाजी की आँख में आँसू नहीं देखे। अतः माता ने पूछा - ''बेटा ! तू (अब) इतना अधिक निष्ठुर हो गया है कि मैं बेहोश हो गई, फिर भी तेरे दिल पर जरा-सा भी असर नहीं हुआ।'' माता को मोहनीय कर्म लाता है। जैसे मनुष्य के शरीर में पराया तत्त्व प्रविष्ट होने पर उसे कभी घड़ीभर हँसाता है, सताता है, नचाता है और कुदाता है, वैसे ही मोह भी पराया तत्त्व (विजातीय पदार्थ) है। जिसके जीवन में मोह का प्रबल वेग है, उसे मनोज्ञ सुख मिलने पर वह हँसता है, उन सुखों के चले जाने पर वह रोता है। वह परकीय पदार्थ मनुष्य को हैरान-परेशान करता है। किन्तु शुद्ध सम्यक्त्व धारक आत्माओं के तेज से भाग जाता है। अर्जुनमाली में यक्ष परकीय पदार्थरूप में प्रविष्ट हो गया था, किन्तु शुद्ध सम्यक्त्व धारक सुदर्शन श्रमणोपासक के तेज को वह झेल नहीं सका। फलतः अर्जुनमाली के शरीर से उसे भाग जाना पड़ा।

जैसे सांसारिक सम्यग्दर्शनी सद्गृहस्थ की आत्मा के तेज से यक्षरूप परकीय पदार्थ भाग गया, वैसे ही जिसका चेतनदेव जग जाता है और अपनी अनन्तशक्ति की हुँकार करता है, तो क्या ताकत है, मोहरूपी परकीय तत्त्व की कि वह टिक सके ? नहीं। अपना आत्मा अनन्तशक्ति का धनी है। यह धारे तो तीसरे भव में मोक्ष जा सकता है, ऐसी शक्ति है इसमें किन्तु अभी तक यह चेतनदेव जगा नहीं है, तब मोह कैसे भागे ?

धन्नाजी की माता ने उससे पूछा - ''बेटा! पहले तो जरा-सा मेरा मस्तक दुखता, तब तुझे कुछ (संवेदन) हो जाता था। तू रोने लग जाता था, किन्तु अब तू कठोर कैसे हो गया ?'' उत्तर में धन्नाजी बोले ''माताजी ! ऐसा कुछ भी नहीं है। पहले मुझे मोह ने जीत लिया था, इस कारण में रोता था। किन्तु अब मैंने मोह को जीत लिया है। अतः माताजी ! मुझे दीक्षा लेने की आज्ञा दें। मुझे इस उत्तम मानवभव को विषयभोगों में फँसकर खोना नहीं है।''

जो व्यक्ति आलस्य और प्रमाद में पड़कर इस महंगे मानवभव को व्यर्थ ही खो देता है, वह उस मूढ़ के समान समझा जाता है, जैसे कोई मानो सोने के थाल में मिट्टी भरता है, अमृत से अपने पैर धोता है, उत्तम हाथी पर लकड़ियों के भार को लादता है और अमूल्य चिन्तामणि रत्न का उपयोग कौए उड़ाने में करता है। किसी गरीब पर राजा मुग्ध (प्रसन्न) होकर उसे सोने का

रत्नजटित थाल उपहार में दे दे, किन्तु वह गरीब उस बहुमूल्य थाल में कचरा भरे तो उसे तुम क्या कहोगे ? उसे मूर्ख ही कहोगे न ? किसी रुग्ण मनुष्य को उसके रोग को मिटाने के लिए किसी सिद्ध पुरुष ने अमृत की बोतल भरकर दी, किन्तु अज्ञानतावश उक्त रोगी मनुष्य अपने रोग को मिटाने हेतु उसे पीता नहीं, किन्तु उसका उपयोग अपने पैर धोने में करता है और (भेंट में मिले) हाथी पर बैठने के बदले वह मूर्ख उस पर लकड़ियों का भार लादकर गाँव में बेचने के लिए निकलता है, तो तुम्हें उसकी मूर्खता पर हँसी आएगी न ? हाँ, तो अब मैं तुम लोगों से पूछती हूँ कि तुम्हें रत्नजटित स्वर्ण थाल जैसा, अमृततुल्य तथा उत्तम हाथी के समान एवं चिन्तामणि रत्न के सदृश मनुष्यभव मिला है, जिसकी एक-एक सेकंड भी कीमती है। तुम लोग उसका (मनुष्य जीवन का) उपयोग किस में कर रहे हो ? अधिकांश व्यक्ति तो इस महामूल्य मनुष्य जीवन का समय भोग-विलास में ही व्यर्थ गंवा रहे हैं। मुझे उन लोगों को क्या कहना ? (हँसाहँस) तुम लोग तो ऐसे नहीं हो कि चिन्तामणिरत्न से कौए उड़ाओ ! तुम लोग तो चतुर हो । अतः अब समय को पहचान कर इस मानवभव को आत्म-साधना में लगाओ, ताकि शीघ्र मोक्ष मिले। ●

परिज्ञातकर्मा : गहरी जिज्ञासा

लेखक : उपाध्याय डॉ. विशालमुनिजी म. सा.

क्या अच्छा है ? क्या बुरा ? क्या करने योग्य है, क्या छोड़ने योग्य ? क्या जानने योग्य ? यह जो समझ लेता है और उसके अनुसार आचरण करता है वह 'परिज्ञातकर्ता' बन जाता है। परिज्ञातकर्ता को सब ज्ञान होता है और वह अच्छे कर्म करके अपना मानव जीवन सुधार लेता है। आप भी साधना, आराधन, सत्संग करके परिज्ञातकर्ता बनकर अपना कल्याण कर सकते हैं।

जो साधक मन वचन और क्रियाओं को जानता है। क्रियाओं से कर्म कैसे बनता हैं और कर्मो से आत्मा कैसे जुड़ी है, इसके संदर्भ में सब जानता है, वह 'परिज्ञार्तकमा होता है। संसार बड़ा जटिल है। शास्त्रकारों ने कहा हैं सारे ब्रम्हांड में जितने भी पुद्गल हैं उन पुद्गलों के सार से मानव बसा है। अद्भुत रचना है संसार और मानव की आदमी अगर स्वयं को समझे, तो सारे ब्रम्हांड को समझ सकता है। यह जानने के लिए आदमी में जिज्ञासा चाहिए, जब तक उसमें जानने की जिज्ञासा नहीं होगी कुछ नहीं प्राप्त कर सकता। जिसे कुछ पता नहीं होता उसे 'अपरिज्ञातकर्मा' कहते हैं। वह कुछ नहीं जानते, जब जानते ही नहीं तो करेंगे क्या ? ऐसे लोग जन्म-मृत्यु में, बुराईयों में कर्म बंधनों में फँसे रहते हैं, इससे बचने के लिए शरीर की अद्भुत-रचना तथा कलात्मकता को पहचानें। शरीर का सूक्ष्म रुप है मन जब तक उसे स्थिर नहीं किया जाता, अपने वश में नहीं किया जाता परिज्ञातकर्मा नहीं बना जा सकता है। वैज्ञानिक दृष्टि रखने वाला परिज्ञातकर्मा बन सकता है। परिज्ञातकर्मा बनने के लिए वैज्ञानिक दृष्टि का आना जरुरी है। जब व्यक्ति में जिज्ञासा उत्पन्न होती है और उस दिशा में ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास करता है तो वह शिष्य व गुरु दोनों बन जाता है। उसका प्रश्न होता है और समाधान भी वही ढूँढता है। ऐसी स्थिति में पहुँचने वालों की गिनती वैज्ञानिकों में होती है। ऐसी स्थिति जो प्राप्त कर लेता है वह परिज्ञातकर्मा बन जाता है। जिज्ञासा ही इंसान को ज्ञानी बनाती है। जिज्ञासा से ही परिज्ञात करने का मार्ग प्रशस्त होता है और परिज्ञात स्थिति का आना, बहुत बड़ी अवस्था है। परिज्ञातकर्मा बनने के लिए ज्यादा से ज्यादा साधना, आराधना की जरुरत है। जितना परमात्मा के करीब होंगे उतना ही शक्ति हमें परिज्ञातकर्मा बनने के लिए मिलेगी। इसलिए आप लोग साधना, आराधना और जिज्ञास की गहराई को पाकर परिज्ञातकर्मा बने। ●